

## Padma Shri



### **PROF. ANIL KUMAR BORO**

Prof. Anil Kumar Boro is an eminent poet, folklorist, translator, academician and literary critic, who has made significant contributions to the growth and development of Bodo literature, folklore and culture. Currently, he is serving as the Head of the Department of Folklore Research at Gauhati University, where he continues to inspire and mentor scholars in the field.

2. Born on 9<sup>th</sup> December, 1961, in Kahitama near Manas National Park, Assam, Prof. Boro completed his Master's degree from the Department of English, Gauhati University, and later earned his Ph.D. from the Folklore Research Department. He began his academic career as a Lecturer in English at Dimoria College in 1988 before joining the Folklore Research Department at Gauhati University in 2000.

3. Prof. Boro has authored and edited over 30 books spanning multiple literary genres, including poetry, literary criticism, novels, children's literature, travelogues, and folklore studies. His landmark books, such as *Folk Literature of the Bodos: An Introduction*, *A History of Bodo Literature*, *The Flute and the Harp*, *Delphini Onthai Mwdai Arw Guhun Crubun Khonthai* and have been instrumental in shaping modern Bodo literary discourse. His translated works from other languages, have introduced world literature to Bodo readers, bridging cultural and literary gaps. As an editor, he has played a crucial role in curating significant literary anthologies and journals, including *The Bodo Quarterly*, *Journal of Folklorists* and *Thunslai*, an online journal of translation.

4. Beyond his literary contributions, Prof. Boro has worked extensively for the promotion of mother tongue education and the implementation of the National Education Policy (NEP) 2020 in Bodoland. He has actively contributed to literary organizations, including the Bodo Sahitya Sabha and has been instrumental in organizing the Kokrajhar Literary Festival since 2021. His participation in national and international conferences has helped bring Bodo literature and folklore to global platforms, representing India in academic and literary forums across Greece, Italy, Lithuania, Denmark and China. He has participated in various national / international programmes and conferences.

5. For his contributions to Bodo literature and folklore, Prof. Boro has been honored with the prestigious Sahitya Akademi Award (2012), Rangsar Literary Award and the Sahitya Sadhana Botha (2024).



### प्रो. अनिल कुमार बोरो

प्रो. अनिल कुमार बोरो एक प्रख्यात कवि, लोकगीतकार, अनुवादक, शिक्षाविद और साहित्यिक आलोचक हैं, जिन्होंने बोडो साहित्य, लोककथा और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में, वह गुवाहाटी विश्वविद्यालय में लोककथा अनुसंधान विभाग के प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं, जहाँ वह इस क्षेत्र के विद्वानों को प्रेरित और उनका मार्गदर्शन करते रहते हैं।

2. 9 दिसंबर, 1961 को असम के मानस नेशनल पार्क के पास कहितामा में जन्मे, प्रो. बोरो ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग से अपनी स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी की और बाद में लोकगीत अनुसंधान विभाग से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 2000 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के लोकगीत अनुसंधान विभाग में शामिल होने से पहले वर्ष 1988 में डिमोरिया कॉलेज में अंग्रेजी के व्याख्याता (लेक्चरर) के रूप में अपना अकादमिक करियर शुरू किया।

3. प्रो. बोरो ने कविता, साहित्यिक आलोचना, उपन्यास, बाल साहित्य, यात्रा वृत्तांत और लोककथा अध्ययन सहित कई साहित्यिक विधाओं में 30 से अधिक पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है। उन्होंने बोडो का लोक साहित्य : एक परिचय, बोडो साहित्य का इतिहास, बांसुरी और वीणा, डेलिफ़नी ओन्थाई म्वदाई अरव गुहुन क्रुबुन खोंथाई जैसी प्रमुख पुस्तकें लिखी हैं और आधुनिक बोडो साहित्यिक विमर्श को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्य भाषाओं से उनके अनूदित कार्यों ने सांस्कृतिक और साहित्यिक दूरी को मिटाते हुए बोडो पाठकों को विश्व साहित्य से परिचित कराया है। एक संपादक के रूप में, उन्होंने द बोडो क्वार्टरली जर्नल ऑफ़ फोकलोरिस्ट्स और अनुवाद की एक ऑनलाइन पत्रिका थुंसलाई सहित महत्वपूर्ण साहित्यिक संकलन और पत्रिकाओं को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. अपने साहित्यिक योगदान से इतर, प्रो. बोरो ने मातृभाषा शिक्षा को बढ़ावा देने और बोडोलैंड में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन के लिए बड़े पैमाने पर काम किया है। उन्होंने बोडो साहित्य सभा सहित साहित्यिक संगठनों में सक्रिय रूप से योगदान दिया है और वर्ष 2021 से कोकराझार साहित्य महोत्सव के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में उनकी भागीदारी ने बोडो साहित्य और लोककथाओं को वैश्विक मंचों पर लाने में मदद की है और उन्होंने ग्रीस, इटली, लिथुआनिया, डेनमार्क और चीन में शैक्षणिक और साहित्यिक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों और सम्मेलनों में भाग लिया है।

5. बोडो साहित्य और लोककथाओं में उनके योगदान के लिए, प्रो. बोरो को प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार (2012), रंगसार साहित्य पुरस्कार और साहित्य साधना बोधा (2024) से सम्मानित किया गया है।